DIVINE ASTRO

विस्तृत कुंडली मिलान रिपोर्ट

Arjun एवं Meera

मिलान	Arjun एवं Meera
गुण मिलान	28 / 36 — उत्तम / शुभ
तिथि	28 नवंबर 2026

नमूना

उदाहरण के लिए नमूना, एक काल्पनिक कुंडली पर बना। आपकी रिपोर्ट आपके अपने जन्म विवरण से बनती है।

दोनों की कुंडली

	ARJUN	MEERA
जन्म	15 अगस्त 1990, 10:30	11 फ़रवरी 1993, 07:45
जन्म स्थान	New Delhi, India	Jaipur, India
चंद्र राशि	वृषभ	कन्या
नक्षत्र	रोहिणी, पाद 3	चित्रा, पाद 1
लग्न	कन्या	कुंभ

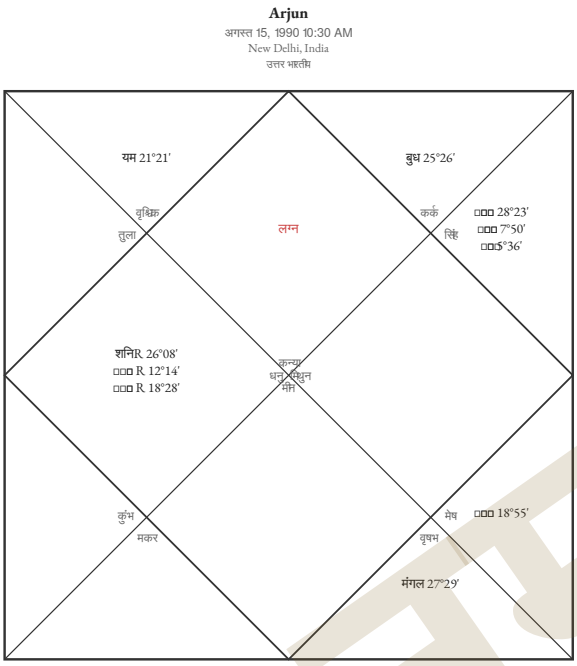

Arjun — लग्न कुंडली (D1)

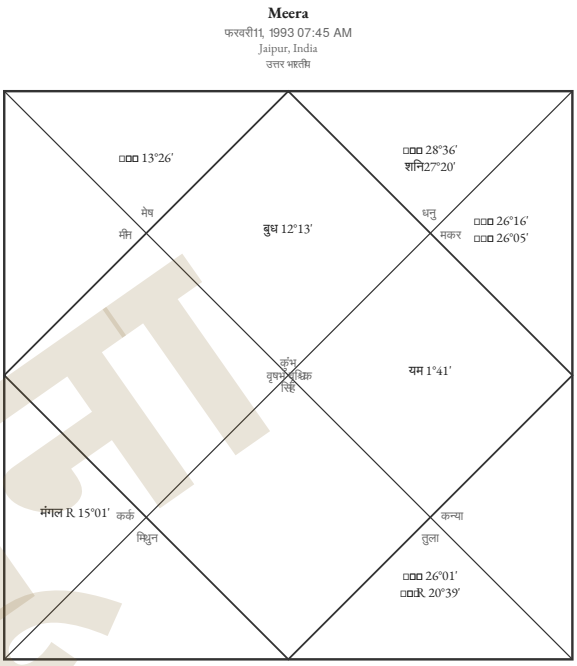

Meera — लग्न कुंडली (D1)

गुण मिलान एक नज़र में

28 / 36 उत्तम / शुभ

परिहार से पहले: 21 — भकूट: राशि स्वामी शुक्र एवं बुध परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं

पारंपरिक 25-32 गुण के शुभ वर्ग में।

18/25/33 गुण के मानक पारंपरिक नियम हैं। यदि मुख्य कूट (नाड़ी, भकूट, ग्रह मैत्री) शुभ हों तो थोड़े कम अंक भी स्वीकार्य हो सकते हैं।

आठों कूट, एक-एक करके

कूट	ARJUN	MEERA	गुण
वर्ण	वैश्य	वैश्य	1 / 1
वश्य	चतुष्पाद	मानव	1 / 2
तारा (दीना)	2 · सम्पत्	9 · अतिमित्र	3 / 3

कूट	ARJUN	MEERA	गुण
योनि	सर्प	व्याघ्र (बाघ)	2 / 4
ग्रह मैत्री	शुक्र	बुध	5 / 5
गण	मनुष्य	राक्षस	1 / 6
भकूट	5	9	7 / 7
नाड़ी	अंत्य	मध्य	8 / 8

वर्ण — 1 / 1

क्या देखा जाता है: चंद्र राशि के वर्ण से आध्यात्मिक और कार्य-स्वभाव। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से कम न हो तो पूरा अंक।

इन दोनों कुंडलियों में: वर का वर्ण वैश्य और कन्या का वैश्य है — वर का वर्ण कन्या से निम्न नहीं है, जो अनुकूल है।

वश्य — 1 / 2

क्या देखा जाता है: आपसी आकर्षण और प्रभाव — कौन-सी राशि दूसरी को "वश" में करती है।

इन दोनों कुंडलियों में: वर का चतुष्पाद वर्ग और कन्या का मानव वर्ग — आंशिक अनुकूलता (1/2 अंक)।

तारा (दीना) — 3 / 3

क्या देखा जाता है: स्वास्थ्य और कल्याण, दोनों जन्म नक्षत्रों के बीच की गिनती से; तीसरी, पाँचवीं और सातवीं तारा प्रतिकूल मानी जाती है।

इन दोनों कुंडलियों में: वर से कन्या की तारा सम्पत् (2वीं) और कन्या से वर की तारा अतिमित्र (9वीं) — दोनों शुभ ताराएं हैं (पूर्ण 3 अंक)।

योनि — 2 / 4

क्या देखा जाता है: शारीरिक और दांपत्य अनुकूलता; हर नक्षत्र की एक पशु योनि होती है, और परस्पर शत्रु योनियों को शून्य अंक मिलता है।

इन दोनों कुंडलियों में: वर की सर्प और कन्या की व्याघ्र (बाघ) योनि — सम योनि (2/4 अंक)।

ग्रह मैत्री — 5 / 5

क्या देखा जाता है: दोनों चंद्र राशियों के स्वामियों की मित्रता — दंपति का मानसिक तालमेल।

इन दोनों कुंडलियों में: वर के राशि स्वामी शुक्र और कन्या के बुध हैं — परस्पर मित्र एवं मित्र संबंध (5/5 अंक)।

गण — 1 / 6

क्या देखा जाता है: स्वभाव: देव, मनुष्य या राक्षस गण।

इन दोनों कुंडलियों में: वर का मनुष्य गण और कन्या का राक्षस गण — गण दोष (स्वभाव में भिन्नता एवं तनाव की संभावना, 1/6 अंक)।

भकूट — 7 / 7

क्या देखा जाता है: दोनों चंद्र राशियों की परस्पर स्थिति। 2/12, 5/9 और 6/8 की स्थिति भकूट दोष बनाती है, जो दोनों राशियों के स्वामी एक हों या मित्र हों तो निरस्त हो जाता है।

इन दोनों कुंडलियों में: 5/9 भकूट दोष बन रहा था, किंतु राशि स्वामी शुक्र एवं बुध परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं के कारण दोष परिहार (भंग) होकर अंक बहाल हुए।

दोष का परिहार: राशि स्वामी शुक्र एवं बुध परस्पर नैसर्गिक मित्र हैं

नाड़ी — 8 / 8

क्या देखा जाता है: सबसे अधिक अंकों वाला कूट, स्वास्थ्य और संतान से जुड़ा। दोनों की एक ही नाड़ी होना नाड़ी दोष है; राशि एक पर नक्षत्र भिन्न, या नक्षत्र एक पर चरण भिन्न होने पर इसका शास्त्रीय परिहार माना जाता है।

इन दोनों कुंडलियों में: वर की अंत्य नाड़ी (कफ) और कन्या की मध्य नाड़ी (पित्त) — भिन्न नाड़ी होने से नाड़ी दोष नहीं है (8 अंक)।

मांगलिक दोष

Arjun: मांगलिक (अल्प / सामान्य)। मंगल लग्न से 8वें, चंद्र से 12वें भाव में स्थित होने से मांगलिक योग बनता है (तीव्रता: अल्प / सामान्य)। इस कुंडली में शास्त्रीय परिहार: मंगल स्वराशि (मेष) में स्थित है।

Meera: मांगलिक (अल्प)। मंगल शुक्र से 4वें भाव में स्थित होने से मांगलिक योग बनता है (तीव्रता: अल्प)।

दोनों के लिए: संतुलित / परिहार। दोनों कुंडलियां मांगलिक हैं। पारंपरिक नियमानुसार दोनों का मांगलिक दोष परस्पर निष्प्रभावी (शांत) हो जाता है।

मंगल दोष का विचार लग्न, चंद्र और शुक्र से किया जाता है। कई विद्वानों के मतानुसार 28 वर्ष की आयु के उपरांत मंगल दोष का प्रभाव क्षीण हो जाता है।

दोनों कुंडलियों के मुख्य ग्रह-संबंध

	ARJUN	MEERA
लग्न और लग्नेश	कन्या — स्वामी बुध	कुंभ — स्वामी शनि
चंद्र राशि और राशीश	वृषभ — स्वामी शुक्र	कन्या — स्वामी बुध
शुक्र	कर्क, 11वाँ भाव	मीन, 2वाँ भाव
मंगल	मेष, 8वाँ भाव	मिथुन, 5वाँ भाव
गुरु	कर्क, 11वाँ भाव	कन्या, 8वाँ भाव
सप्तम भाव (विवाह) और सप्तमेश	मीन — स्वामी गुरु, 11वें भाव में	सिंह — स्वामी सूर्य, 12वें भाव में

- राशि स्वामी शुक्र (Arjun) और बुध (Meera): शुक्र के लिए बुध मित्र हैं; बुध के लिए शुक्र मित्र हैं।
- लग्नेश बुध (Arjun) और शनि (Meera): बुध के लिए शनि सम हैं; शनि के लिए बुध मित्र हैं।
- सप्तमेश गुरु (Arjun) और सूर्य (Meera): गुरु के लिए सूर्य मित्र हैं; सूर्य के लिए गुरु मित्र हैं।
- Arjun का चंद्र Meera के लग्न से 4वें भाव में पड़ता है।
- Meera का चंद्र Arjun के लग्न से 1वें भाव में पड़ता है।

मित्र, सम और शत्रु ग्रहों के वही नैसर्गिक संबंध हैं जिनसे ग्रह मैत्री कूट के गुण बनते हैं। लग्न पर आधारित पंक्तियों के लिए जन्म समय चाहिए; जिस कुंडली का जन्म समय ज्ञात नहीं, उसके लिए वे छोड़ दी गई हैं।

आने वाले महीनों के विवाह मुहूर्त

महीना	तिथियाँ	दिन
नवंबर 2026	कोई नहीं (चातुर्मास)	0
दिसंबर 2026	3, 4, 6, 12	4
जनवरी 2027	15, 20, 24, 27, 31	5
फरवरी 2027	3, 11, 26, 28	4
मार्च 2027	2, 4, 10, 11, 15	5
अप्रैल 2027	19, 21, 26, 28	4
मई 2027	8, 9, 16, 17, 21, 23, 25	7
जून 2027	1, 5, 10, 15, 19, 21, 27	7
जुलाई 2027	कोई नहीं (चातुर्मास, शुक्र अस्त)	0
अगस्त 2027	कोई नहीं (चातुर्मास, गुरु अस्त, शुक्र अस्त)	0
सितंबर 2027	कोई नहीं (चातुर्मास, गुरु अस्त, पितृ पक्ष, शुक्र अस्त)	0
अक्टूबर 2027	कोई नहीं (चातुर्मास, शुक्र अस्त)	0

महीना	तिथियाँ	दिन
नवंबर 2027	11, 12, 16, 21, 24, 26	6
दिसंबर 2027	9	1
जनवरी 2028	19, 22, 24	3

ये शास्त्रीय पंचांग (मुहूर्त चिंतामणि के नियम, लाहिड़ी, नई दिल्ली) की विवाह तिथियाँ हैं, वही गणना और सूची जो हमारे /muhurat/vivah पृष्ठों पर है: शुभ तिथि, शुभ वार और विवाह के ग्यारह नक्षत्रों में से एक, तथा चातुर्मास, खरमास और शुक्र या गुरु के अस्त काल को छोड़कर। ये हर दंपती के लिए समान हैं, व्यक्तिगत मुहूर्त नहीं; समय अपने कुल पुरोहित से निश्चित कराएँ।

इस रिपोर्ट के बारे में

यह रिपोर्ट हमारे नियम-आधारित इंजन ने दोनों जन्म कुंडलियों से बनाई है: अष्टकूट सारणियाँ, मंगल दोष के नियम और ऊपर का पंचांग, ठीक वैसे ही जैसे मुफ़्त मिलान टूल गणना करता है। इसका कोई भी अंश किसी AI मॉडल ने न लिखा है, न बदला है। अष्टकूट एक पारंपरिक पद्धति है, माप नहीं; यह विवाह के निर्णय का एकमात्र आधार नहीं होना चाहिए।

नमूना